B.Ed 2nd year (20-22)

(3) व्यक्तिगत निर्देशन (Personal Guidance) :-

Introduction :- निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को कुछ इस प्रकार से मार्गदर्शन कराता है कि वह विभिन्न तरह की समस्याओं या समायोजन करने तथा जीवन-लक्ष्यों से संबंधित समस्याओं का समाधान करने की योग्यता प्राप्त कर लेता है।

अतः यह निर्देशन शैक्षिक, व्यवसायिक तथा व्यक्तिगत रूप से प्रदान किया जाता है चूंकि सभी व्यक्ति एक समान विचारों या, शारीरिक संरचना, बौद्धिक क्षमता या पारिवारिक, एवं सामाजिक इत्यादि ~~रूप से~~ क्षेत्रों में एक जैसे नहीं होते हैं इसलिए व्यक्तिगत ~~~~ निर्देशन का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत होता है जो बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था तक निरंतर चलता रहता है जिसका उद्देश्य समाज में व्यक्तियों की विभिन्न समस्याओं से छुटकारा दिलाकर उन्हें संतुलित ~~~~ जीवन जीने की योग्यता प्रदान करना ताकि व्यक्तिगत रूप से समस्या समाधान की योग्यता प्राप्त कर अपनी आजीविका और लक्ष्यों तक पहुँच सके।

* **व्यक्तिगत निर्देशन का अर्थ :-** व्यक्तिगत निर्देशन से तात्पर्य व्यक्ति की वैसी समस्याएँ जिसमें उसकी व्यक्तिगत समस्याओं के ~~~~ अंतर्गत स्वास्थ्य, संवेगात्मक, समायोजन, पारिवारिक, सामाजिक समायोजन संबंधी समस्याओं को समाधान करने की योग्यता एक कुशल एवं प्रशिक्षित निर्देशक के द्वारा प्रदान करते है

समस्या समाधान हेतु योग्यता प्रदान की जाये।

अर्थात व्यक्ति की कुछ समस्यायें उसके वैयक्तिक जीवन से संबंधित होती हैं जिनके लिए समुचित निर्देशन शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के अंतर्गत सम्भव नहीं है, व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से जुड़ी समस्याओं के समाधान हेतु व्यक्ति की जो सहायता की जाती है वह वैयक्तिक निर्देशन कहलाती है।

* डी० क्रो तथा एलिस क्रो के अनुसार —:

"व्यक्तिगत निर्देशन वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति को दी गई वह सहायता जो उसके जीवन के समस्त क्षेत्रों एवं अभिवृत्तियों के विकास को दृष्टि में रखकर उपयुक्त समायोजन के साथ सहायता करता है।"

* जोन्स के अनुसार —: "यह एक प्रकार का ऐसा व्यक्तिगत सहायता है जो किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को उसके लक्ष्यों को विकसित करने में, समायोजन करने में तथा अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं को दूर करने में सहायता प्रदान करती है।

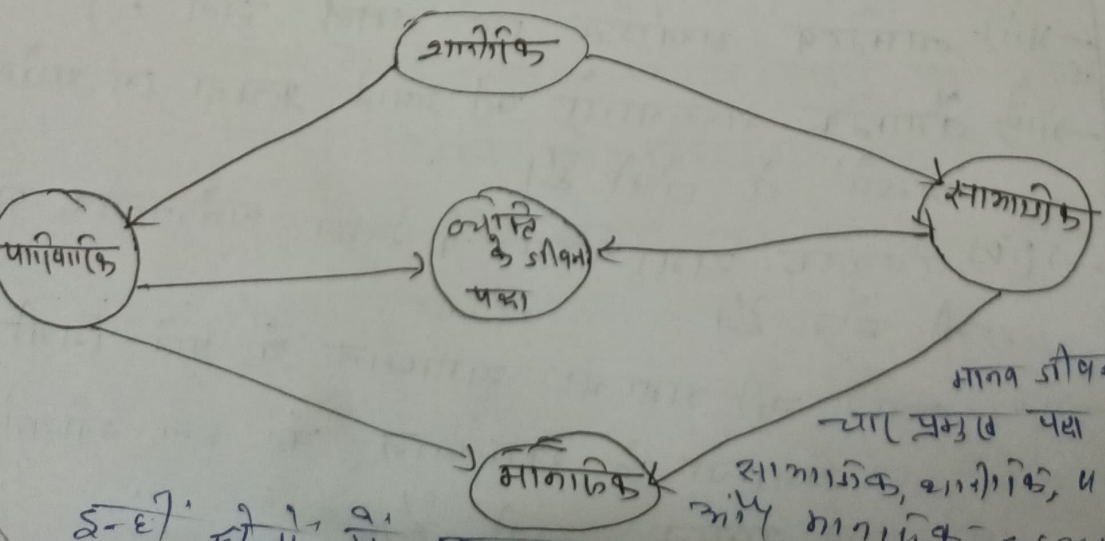

मानव जीवन के चार प्रमुख पक्ष है — सामाजिक, शारीरिक, पारिवारिक और मानसिक इत्यादि है

इन्हीं क्षेत्रों में उत्पन्न समस्याओं के समाधान हेतु उसे वैयक्तिक

~~व्यक्तिगत~~ व्यक्तिक निर्देशन की विशेषता

*

(1) इससे व्यक्ति के शारीरिक विकास एवं समायोजन में सहायता मिलता है।

(2) यह व्यक्ति के संवेगात्मक विकास को प्रभावित करता है।

(3) यह व्यक्ति के सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करता है

(4) नैतिक और आध्यात्मिक विकास व्यक्ति के जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होता है

(5) यह व्यक्ति को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

* व्यक्तिक निर्देशन के आधारभूत सिद्धांत :-

(Basic Principles of Personal Guidance)

→ (i) व्यक्ति की अनेक समस्याओं में अंतर्सम्बंध होता है।

→ (ii) व्यक्तित्व अखंडित एवं जटिल होता है।

→ (iii) वैयक्तिक समस्याओं की उत्पत्ति प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कारणों से होती है।

→ (iv) वैयक्तिक समस्याओं के साथ संवेगात्मक पहलू भी होता है।

→ (v) व्यक्ति की समस्या समाधान के प्रति निजी धारणा समस्या के समाधान का हल खोजने में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

* व्यक्तिगत निर्देशन का महत्व एवं उद्देश्य (Objectives and Importance of personal Guidance) :-

(i) व्यक्ति में समायोजन की योग्यता का विकास करना।

(ii) छात्र को आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बी बनाना।

(iii) छात्र को भावात्मक नियंत्रण कला में निपुण करना।

(iv) व्यक्ति को नागरिक और सामाजिक संबंधों में निपुण बनने में सहायता करना।

(v) मानसिक, शारीरिक और आर्थिक दृष्टि से पंगु छात्रों को उत्साह से प्रोत्साहित करना ताकि वे भावी जीवन और व्यक्तिगत तथा सामाजिक कल्याण हेतु संघर्ष कर सके।

(vi) जीवन में संबंधित विभिन्न परिस्थितियों में विवेकपूर्ण एवं सूझ-बूझ युक्त व्यवहार का विकास करने में सहयोग प्रदान करना।

(vii) परिवार एवं समाज में संबंधित सदस्यों के साथ अच्छे संबंध बनाये रखने की योग्यता का विकास करने में सहायता देना।

(viii) अवकाश के समय का लाभप्रद उपयोग हेतु क्षमता का विकास करना।

* वैयक्तिक समस्याएँ :-
(Personal problems)

→ स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास संबंधी समस्या
problems Related to Physical Health and constitutional Development)
→ सामाजिक सम्बंधों से जुड़ी समस्याएँ।
(Problems Related to social Relationship)
→ पारिवारिक जीवन एवं पारिवारिक संबंधों से संबंधित समस्याएँ (problem Related to Home and family Relationship.
→ संवेगात्मक व्यवस्था से संबंधित समस्याएँ।
problem Related to Emotional
→ आर्थिक समस्याएँ (Financial problems)
→ धर्म-चरित्र आदर्श और मूल्यों से संबंधित समस्याएँ (problem Related to Religion, Moral, Ideals and values)
→ यौन, प्रेम एवं विवाह संबंधी समस्याएँ।
Problem Related to sex, courtship, and Marriage)

* व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता :-

(1) व्यक्तिगत जीवन में सुख-शांति एवं संतोष का विकास करने के लिए/
(2) व्यक्तिगत समस्याओं के संदर्भ में सही निर्णय लेने हेतु।
(3) व्यक्तिगत समायोजन की क्षमता का विकास करने हेतु

(4) व्यक्तिगत समायोजन की क्षमता का विकास करने के लिए।

(5) व्यक्तिगत कौशलों का विकास करने की दृष्टि से।

(6) पारिवारिक एवं व्यावसायिक जीवन में सामंजस्य स्थापित करने हेतु

(7) पारस्परिक तनावों को कम करने हेतु।

* शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर वैयक्तिक निर्देशन का उद्देश्य :-

→ (1) प्राथमिक स्तर पर
→ (2) हाई-स्कूल या माध्यमिक स्तर पर
→ (3) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर
→ (4) महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर

(1) प्राथमिक स्तर
- (i) पूर्व प्राथमिक स्तर।
- (ii) प्राथमिक स्तर या 6 to 8

(1) पूर्व प्राथमिक स्तर :- (Pre-primary stage)

(1) बालकों को कविता एवं कहानी कहकर उन्हें अपनी अभिव्यक्ति का अवसर उपलब्ध कराना।

(2) बालकों में उत्तरदायित्व निर्वाह करने की भावना का विकास करना और - खिलौनों का यथास्थान पर रखना, अपने बस्तों को रखना इत्यादि।

(3) बालकों को स्वयं का तथा अपने परिवेश का उचित मूल्यांकन करने की क्रिया में निर्देशन के द्वारा सहायता प्रदान करना।

~~(4) बालकों को स्वयं का तथा अपने परिवेश का उचित मूल्यांकन करने की क्रिया में निर्देशन के द्वारा सहायता प्रदान करना।~~

(5) बालकों के मनोरंजन एवं खेलने की समुचित व्यवस्था करना।

(5) बालकों की अपनी स्वास्थ्य की देख-रेख करने में सहायता करना

(6) बालकों में उत्तम आदतों का विकास करना।

(ii) <u>प्राथमिक स्तर पर</u> :- इस अवस्था में बालक की आयु 6 वर्ष से 11 या 12 वर्ष तक की होती है। इसके लिए क्रो एण्ड क्रो का कहना है कि विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं को छात्रों में विकसित करने के निम्नलिखित कार्यक्रम का आयोजन करना चाहिए।

(i) व्यावसायिक कौशल के माध्यम से विश्व के विभिन्न कार्यों की सामान्य जानकारी प्रदान करना।

(ii) व्यक्तिगत रुचियों एवं मनोरंजन के संबंध में जानकारी प्रदान करना।

(3) स्नेहयुक्त एवं सुदृढ़ आत्म-अनुशासन की ओर मार्गदर्शन कराना

(4) बालको को दण्ड एवं फटकार जैसी नाकारात्मक प्रभावों से दूर रखना।

(5) बालक को क्रोध नियंत्रण करने एवं नैतिकता का उचित मार्गदर्शन देना।

(6) बालको में शारीरिक स्वास्थ्य की देख-रेख तथा स्वच्छता की आदतों का निर्माण करने में सहायता प्रदान करना।

(B) हाईस्कूल या माध्यमिक स्तर पर :

(1) विद्यार्थियों को अपनी रुचि एवं योग्यतानुसार व्यवसाय की धारणा का विकास करने में सहायता प्रदान करना।

(2) इस स्तर पर शिक्षक को इस प्रकार का नेतृत्व करना चाहिए कि इस आयु के बालक सृजनात्मक, हठी, व्यग्र एवं सक्रिय बालक स्वयं के लाभ तथा समस्त समूह के लाभ के लिए कार्य कर सके।

(3) छात्र एवं छात्राओं को स्वयं के विचारों भावनाओं एवं अभिरुचियों की अभिव्यक्ति हेतु अवसर प्रदान करने चाहिए।

(4) इस स्तर पर बालकों के व्यवहार से संबंधित विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न होती है।

जिसमें अनुभवी शिक्षकों तथा अभिभावकों द्वारा उनकी समस्याओं का निराकरण के लिए निर्देशन कार्यों को सम्पन्न किया जाता है विद्यार्थियों में एक अच्छे दृष्टिकोण का विकास होता है जिससे उनमें सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक, धार्मिक दृष्टिकोण विकसित होता है जिससे वह समाज में एक आदर्श नागरिक बन कर अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

अतः हम कह सकते हैं कि वैयक्तिक निर्देशन व्यक्ति के जीवन की सफलता हेतु बहुत ही आवश्यक है सन्तुलित वैयक्तिक निर्देशन की व्यवस्था करके समाज एवं विद्यालय व्यक्ति तथा समाज को ऊँचा उठा सकते हैं। इसप्रकार वैयक्तिक निर्देशन व्यक्ति की समस्याओं के दोनो पक्ष - वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन की कठिनाईयों को दूर कर ~~समस्या~~ शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास में सहायता करता है।

* निर्देशन या मार्गदर्शन में प्रधानाचार्य ~~या शिक्षक~~ की भूमिका :-
प्रधानाचार्य की भूमिका :-

(1) सर्वप्रथम निर्देशन सेवायें प्रदान करने हेतु एक समिति का गठन किया जाता है। यह समिति ही निर्देशक के रूप में कार्य करती है (प्रधानाचार्य के नेतृत्व में)

(2) इस कार्य हेतु उत्तम भवन तथा धन की व्यवस्था की जाती है

(3) विद्यालय में निर्देशन संबंधि क्रियाओं का निरीक्षण करके नेतृत्व प्रदान किया जाता है

(4) प्रधानाचार्य के द्वारा निर्देशन संबंधी कार्यों में अपना नेतृत्व प्रदान किया जाता है

(5) निर्देशन कार्यों हेतु योग्य एवं कुशल कार्यकर्ताओं की नियुक्ति भी प्रधानाचार्य के द्वारा किया जाता है

~~अतः~~ विद्यालयों में निर्देशन सुविधायें देने में प्रधानाचार्य की अहम भूमिका होती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यदि विद्यालयों में निर्देशन समिति का गठन नहीं किया गया तो बालक अपने मार्ग से भटक सकते हैं। अतः छात्रों को राह दिखाने हेतु निर्देशन समिति का गठन का प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है

* शिक्षकों की भूमिका :-

→ (1) छात्रों के साथ संबंध स्थापित कर बाधित बालकों का पता लगाना।

→ (2) छात्रों के अभिभावकों से संपर्क स्थापित करना

→ (3) छात्रों को पुस्तकालय व सामाजिक संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित करना सिखाना।

→ (4) पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना।

→ (5) छात्रों की परीक्षाएँ लेने में सहायता प्रदान करना

→ (6) निर्देशन कार्यक्रम को अधिक-से-अधिक सफल बनाने के लिए प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों को पूर्ण सहयोग देना।